REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 1 | OCTOBER – 2017

क्रमबद्ध भूगोल तथा प्रोदशिक भूगोल में द्वैतवाद

Dr. Satyabir Yadav
Head, Department of Geography,
Govt. college for Women, Pali (Rewari)

प्रस्तावना :

भूगोल में पृथ्वी की सतह के विभिन्न क्षेत्रों में प्राकृतिक तथा मानवीय तथ्यों के बीच अन्तक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। भूगोलवेता इन अन्तःक्रियाओं के अध्ययन के लिए विभिन्न विधि तन्त्रों का प्रयोग करते हैं। भूगोल में क्रमबद्ध तथा प्रादेशिक दो ऐसी विधियां है जिनकी सहायता से भौगोलिक विषय–वस्तु का अध्ययन तथा वर्णन किया जाता है। इन दोनों विधियों का प्रयोग केवल अध्ययन कि सुविधा के लिए किया जाता है। वास्तव में ये दोनों उपागम या विधियां एक दूसरे की पूरक है इन विधियों का प्रयोग बर्नाड वारेनियस ने 17वीं शताब्दी में किया था। क्रमबद्ध तथा प्रादेशिक भूगोल के बीच द्वैतवाद प्राचीनकाल से ही चला आ रहा है। अतः इस द्वैतवाद को समझने से पहले क्रमबद्ध भूगोल तथा प्रादेशिक भूगोल को समझना जरूरी है।

क्रमबद्ध भूगोल

क्रमबद्ध भूगोल में भूतल के भौतिक तथा मानवीय तत्वों के प्रकरणों में बांटकर अलग–अलग अध्ययन किया जाता है। उदाहरण के लिए सम्पूर्ण पृथ्वी या विश्व का अध्ययन किया जाये तो उसे धरातल, जलवायु, मृदा, वनस्पति, जलप्रवाह खनिज, कृषि उद्योग परिवहन तथा जनसंख्या आदि कारकों एवं तत्वों को प्रकरणों में विभाजित करके समस्त विश्व का अध्ययन किया जायेगा। यदि हमें विश्व के किसी भाग का अध्ययन करना है तो यही विधि अपनायी जायेगी। उदाहरण के लिए जलवायु का अध्ययन करने के लिए तापमान, आर्द्रता, वायुभार आदि की विशेषताओं के आधार पर जलवायु का वर्गीकरण किया जाता है और प्रत्येक आधार पर जलवायु का वर्गीकरण किया जाता है। प्रत्येक वर्ग की जलवायु विश्व के किन–किन क्षेत्रों में पायी जाती है। इसकी जानकारी आसानी से ली जा सकती है। भूमध्य सागरीय जलवायु मानसूनी जलवायु, सहारातुल्य जलवायु, टुण्ड्रा जलवायु आदि भूतल पर कहां कहां है। इसका सीमांकन कर जलवायु प्रदेशों के मानचित्र बनाये जाते हैं। दूसरा उदाहरण विश्व में कृषि की फसलों का लिया जा सकता है जैसे चावल के उत्पादन के लिए भौगोलिक दशाओं का अध्ययन आवश्यक है। चावल को बोते समय, उगते व पकते समय कितनी मात्रा मे तापमान व वर्षा होनी चाहिए, किस प्रकार की मिट्टीयां उपयुक्त है ? सिंचाई की कब जरूरत पड़ती है? चावल की कौन–कौन सी किस्में किस किस ऋतु में बोई और काटी जाती है? इन सबका अध्ययन किया जाता है। उपरोक्त लक्षणों को जानने के बाद समस्त पृथ्वी तल पर उसके वितरण के क्षेत्रों का सीमांकन किया जाता है। अन्य फसलें जैसे गेहूँ, कपास, चाय, जूट आदि का भी अध्ययन कर लिया जाता है। इसी प्रकार अन्य भौगोलिक कारकों जैसे भू–आकृति, खनन पदार्थ, परिवहन, निर्माण उद्योग, मिट्टियां आदि का अध्ययन प्रकरण विधि द्वारा किया जाता है। अर्थात् प्रत्येक कारक या प्रकरण का

अलग–अलग विश्लेषण किया जाता है तथा विश्व में उसके वितरण क्षेत्रों या प्रदेशों की स्थितियां का सीमांकन किया जाता है। क्रमबद्ध विधि से मानव भूगोल का भी अध्ययन किया जा सकता है। उदाहरणतः यदि इसके अन्तर्गत जनसंख्या का अध्ययन करना हैं तो विश्व में जनसंख्या का वितरण एवं घनत्व, जनसंख्या वृद्धि दर, लिंगानुपात, साक्षरता, ग्रामीण जनसंख्या, नगरीय जनसंख्या, आदि का अध्ययन अलग–अलग प्रकरण (ज्वचपब) में लेकर अध्ययन किया जायेगा। यदि भौतिक भूगोल का अध्ययन करना है तो उसे विभिन्न मण्डलों जैसे स्थलमण्डल, जलमण्डल, वायुमण्डल आदि में विभक्त करके पृथक अध्ययन किया जाएगा। इन मण्डलों के उपविषयों के विश्लेषण के लिए इन्हें पुनः विभाजित करना पड़ेगा जैसे स्थलमण्डल में पृथ्वी तल पर स्थल के विभिन रूपों जैसे पर्वत, पठार एवं मैदानों की आन्तरिक संरचना जलमण्डल में महासागरीय फर्श का उच्चावच, महासागरीय निक्षेप, प्रवाल भितियाँ आदि तथा वायुमण्डल में वायुमण्डल का संगठन तथा परते, सूर्यातप, तापमान, वायुदाब तथा पवनें, चक्रवात तथा प्रति–चक्रवात आदि का अध्ययन किया जायेगा। अतः स्पष्ट है कि भौतिक तथा मानवीय तत्वों को प्रयोगों में बांटकर भौगोलिक अध्ययन करने के कारण इसे प्रकरण विधि भी कहते हैं क्योंकि इसमें अलग–अलग प्रकरणों का अध्ययन करके ही भूगोल का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

प्रादेशिक भूगोल (Regional Geography)

भूतल पर भौगोलिक दशाये विभिन्न भागों में भिन्न–भिन्न होती है अतः प्रादेशिक भूगोल में पृथ्वी तल के समान लक्षणों वाले प्रदेशों में बाट लिया जाता है। इन सभी समान लक्षणों वाले प्रदेशों में भौगोलिक विशेषताएँ लगभग समान पाई जाती है तथा ये प्रदेश भौगोलिक दशाओं की दृष्टि से परस्पर एक–दूसरे से भिन्न पाये जाते हैं। उदाहरण के लिए थार का रेगिस्तान एक भौगोलिक प्रदेश है जिसमें भौगोलिक दशाओं की समांगता पाई जाती है जो अपने समीपवर्ती या अन्य भौगोलिक प्रदेश गंगा–सतलुज के मैदान से इस दृष्टि से भिन्नता रखता है। इस प्रकार थार मरूस्थल के भौगोलिक तत्व गंगा–सतलुज के मैदान के भौगोलिक तत्वों से भिन्नता रखते है। इनमें भिन्नता लाने वाले भौगोलिक कारकों में धरातल, जलप्रवाह, जलवायु, मिट्टी, प्राकृतिक वनस्पति, जनसंख्या, उद्योग, कृषि, परिवहन आदि प्रमुख है। एक अन्य उदाहरण के द्वारा भी इसे स्पष्ट किया जा सकता हैं विश्व का अध्ययन करने के लिए पूरे संसार को प्राकृतिक खण्डों में विभाजित कर लिया जाता है। उदाहरणार्थ उष्ण मरूस्थलीय खण्ड में अफ्रीका के सहारा मरूस्थल जैसा वातावरण दक्षिणी अफ्रीका के अटाकामा मरूस्थल, भारत के थार मरूस्थल तथा आस्ट्रेलिया के मरूस्थल में भी पाया जाता है। इन प्रदेशों में समांगता लाने वाले कारकों में धरातल, जलवायु, मिट्टी प्राकृतिक वनस्पति कृषि उद्योग जनसंख्या आदि भौगोलिक तथा मानवीय कारकों का प्रभाव देखा जा सकता है। प्रोदशिक अध्ययन में किसी भी प्रदेश को उप प्रदेशों या लघु प्रदेशों में बांट लिया जाता है ताकी उस प्रदेश का विस्तृत अध्ययन करने में आसानी हो। उदाहरण के लिए हम भारत के कुछ प्रमुख भौगोलिक प्रदेशों जैसे हिमालय पर्वतीय प्रदेश, गंगा का मैदान, छोटा नागपुर का पठार, दक्कन का पठार या तटिय प्रदेश को लेकर उनके धरातल, जलवायु, मिट्टी प्राकृतिक वनस्पति, खनिज, जनसंख्या कृषि आदि का अध्ययन करेंगे। प्रादेशिक भूगोल में किसी प्रदेश के सम्बन्धित तत्वों का अध्ययन किया जाता है। बर्नहार्ड वारेनियस प्रथम भूगोलवेता था जिसने प्रादेशिक तथा क्रमबद्ध भूगोल में आधारभूत अन्तर बताया। उन्होंने भूगोल की एक शाखा को सामान्य भूगोल बताया जिसमें पृथ्वी को एक इकाई मानकर प्राकृतिक पर्यावरण का व्यवस्थित अध्ययन किया गया तथा इसे भौतिक भूगोल तक ही सीमित रखा गया क्योंकि प्राकृतिक भूगोल को प्रकृति के सामान्य नियमों या सिद्धान्तों द्वारा सरलता से समझा जा सकता हैं। प्रकृति के सामान्य नियम सम्पूर्ण विश्व की परिघटनाओं से सम्बन्धित होते हैं। भूगोल की दूसरी शाखा को उन्होंने विशेष भूगोल की संज्ञा दी जिसमें विशेष क्षेत्रों तथा प्रदेशों का अध्ययन होता है। विशेष भूगोल में विश्व के अनेक देशों का वर्णन किया गया। इस प्रकार वारेनियस ने क्रमबद्ध रूप से वर्णित सामान्य भूगोल को क्रमबद्ध भूगोल तथा विशेष भूगोल को प्रादेशिक भूगोल बताया है। वारेनियस के उपरान्त जर्मन विद्वान हम्बोल्ट ने सामान्य भूगोल को क्रमबद्ध भूगोल तथा विशेष भूगोल को प्रादेशिक भूगोल कहा है। उन्होंने अपने प्रसिद्ध, ग्रन्थ 'कॉसमास' (ब्वेउवे) को 5 खण्डों में लिखा जिसमें भिन्न–भिन्न क्षेत्रों के प्राकृतिक नियमों का अध्ययन किया। उन्होंने बताया कि पृथ्वी पर भौतिक तत्वों से विभिन्नता में एकता मिलती है उन्होंन भू–आकृति, वनस्पति, ज्वालामुखी, पर्वत, पठार, मैदान, समुद्री जल धारा आदि का भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में अध्ययन किया तथा क्रमबद्ध भूगोल सम्बन्धी कुछ नियम बनाये इसलिए क्षेत्रिय अध्ययन क्रमबद्ध भूगोल में सहायक होते हैं। हम्बोल्ट की

विचारधारा यह नहीं थी कि ये दोनों पृथक भूगोल है। हम्बोल्ट क्षेत्रिय अध्ययन विधि से सामान्यीकरण करना चाहता था। उसका स्पष्ट रूप से भौगोलिक अध्ययनों में गहरा विश्वास था। जर्मनी के विद्वान कार्ल रिटर ने भूगोल के विकास में विशेष योगदान दिया उन्होंने अपनी प्रसिद्ध ग्रन्थनामा 'अर्डकुण्डे' की रचना की। उन्होंने इस ग्रन्थ में प्रादेशिक विधि को अपनाया। उन्होंने अपने ग्रन्थ 'लाण्डेर कुण्डे' में पृथ्वीतल को प्राकृतिक भागों में विभाजित किया और भौतिक भूगोल के विकास के लिए ढांचा तैयार किया। अतः हम्बोल्ट क्रमबद्ध भूगोल में विश्वास रखता था तो रिटर प्रादेशिक भूगोलवेता था। रिचथोफन ने प्रादेशिक भूगोल पर बल दिया उन्होंने प्रदेशों के अध्ययन को भूगोल का मुख्य आधार माना तथा हम्बोल्ट के क्रमबद्ध भूगोल तथा रिटर के प्रादेशिक भूगोल को समन्वित किया और दोनों को एक–दूसरे का पूरक बताया। रैटजल की रचनाओं पर रिटर के विचार का गहरा प्रभाव था। उन्होंनें पृथ्वी तल पर होने वाली घटनाओं और दृश्यों में पारस्परिक सम्बन्धों की व्याख्या की उन्होंने भौगोलिक अध्ययन में प्रादेशिक विधि को मान्यता दी उनके अनुसार पृथ्वी के क्षेत्र एक दूसरे से भिन्न होते है। अतः पृथ्वी के विभिन्न क्षेत्रों का अध्ययन करना ही भूगोल का मुख्य उद्देश्य है। फ्रांसीसी विद्वान विडाल डी–ला ब्लाश (1848–1918) ने प्रादेशिक भूगोल के अध्ययन को महत्व दिया। उनके विचार में भौगोलिक अध्ययन में सबसे पहले प्रदेशों की सबसे छोटी इकाईयों का अध्ययन करना चाहिए। भिन्न–भिन्न प्रादेशिक इकाईयों में समानता के आधार पर भौगोलिक नियम बनाकर उन्हें सामान्य भूगोल में प्रयोग करने चाहिए। ब्लाश का विचार था कि मानव एवं प्रकृति के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध पाया जाता है और उनको एक–दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। उनके अनुसार प्रकृति का मानव पर और मानव का प्रकृति पर प्रभाव पाया जाता है लेकिन एक–दूसरे पर पड़ने वाले प्रभाव में अन्तर को ज्ञात करना बहुत कठिन कार्य है। जहां लम्बे समय तक प्रकृति एवं मानव का सम्बन्ध गहरा होता है वहां पर एक प्रदेश का निर्माण हो जाता है। अतः उन्होंनें भौगोलिक अध्ययन में प्रादेशिक भूगोल को महत्वपूर्ण माना है। ब्लाश पृथ्वी की क्षेत्रीय सम्पूर्णता में विश्वास करता था। उनके अनुसार पृथ्वी और उनके निवासी अन्योन्य सम्बन्धों में एक दूसरे से बंधे हुऐं है। उन्होंने क्रमबद्ध भूगोल के स्थान पर प्रादेशिक भूगोल को समस्त भौगोलिक अध्ययन का केन्द्र बिन्दु माना। उपर्युक्त वर्णन में क्रमबद्ध व्यवस्थित अथवा सामान्य भूगोल तथा विशेष भूगोल अथवा प्रादेशिक भूगोल के द्वैतवाद की पृष्ठभूमी को स्पष्ट किया गया है। क्रमबद्ध भूगोल में समस्त विश्व अथवा उसके किसी भाग का सार्वभौम नियमों के आधार पर वर्णन किया जाता है जबकि प्रादेशिक भूगोल में किसी प्रदेश के सम्बन्धित तत्वों का अध्ययन किया जाता है। अतः प्रादेशिक भूगोल आवश्यक रूप से संशिलष्ट ¨ँलदजीमजपब) है। उसमें पूर्व अवस्थाओं और विभिन्नताओं का वर्णन किया जाता है। उदाहरण के लिए यदि हम भू–आकृति, जलवायु, मृदा, पेड़–पौधे, जीव–जन्तु, खनिज, आर्थिक, सामाजिक, जनसंख्या के वितरण प्रतिरूप विश्व स्तर पर अथवा महाद्वीपों के अनुसार करते है तब यह क्रमबद्ध भूगोल के अध्ययन की पद्धति होगी अर्थात् यदि हम विभिन्न महाद्वीपों में खनिजों के वितरण प्रतिरूप का अध्ययन करे तब यह क्रमबद्ध भूगोल का उदाहरण होगा। जब हम एक विशेष महाद्वीप या उसके किसी प्रदेश को ले तथा उस पर भू–आकारों, मृदा, खनिज, पशु तथा अन्य भौगोलिक तत्वों को अध्यारोपित करे तब यह प्रादेशिक भूगोल का उदाहरण होगा।

भौगोलिक कारक	भौगोलिक प्रदेश					
	उ. अमेरिका	दक्षिणी अमेरिका	यूरोप	एशिया	अफ्रिका	आस्ट्रेलिया	अंटार्कटिका
भू–आकृति विज्ञान जलवाय मिट्टी वनस्पति जीव–जन्तु			प्रादेशिक		प्रादेशिक		
आर्थिक तत्व		क्रमबद्ध					अध्ययन
सामाजिक तत्व नगरीय अध्ययन मानव बसाव			अध्ययन		अध्ययन		
जनसंख्या		क्रमबद्ध					अध्ययन
परिवहन व्यापार राजनीतिक तत्व							

चित्र 6.1 क्रमबद्ध तथा प्रादेशिक भूगोल

उपर्युक्त चित्र में पंक्तियां (त्वे) क्रमबद्ध भूगोल के अध्ययन की पद्धति को प्रकट करती है तथा स्तम्भ प्रादेशिक भूगोल के अध्ययन की पद्धति को दर्शाते है। इस प्रकार क्रमबद्ध तथा प्रादेशिक भूगोल के बीच भूगोल की द्वैधता दिखाई गई है। क्रमबद्ध भूगोल तथा प्रादेशिक भूगोलि में द्वैतवाद मिथ्या है। पिछले कुछ दशकों में भूगोलवेताओं ने प्रादेशिक भूगोल को भौगोलिक अध्ययन में अधिक महत्व दिया है तथा क्रमबद्ध भूगोल को गौण स्थान दिया है। वास्तव में क्रमबद्ध भूगोल तथा प्रादेशिक भूगोल, भूगोल के ही दो पहलू हैं। बेरी के शब्दों में प्रादेशिक और सामान्य भूगोल अलग–अलग पद्धतियां नहीं हैं बल्कि निरन्तरता के दो सिरे हैं। रिचार्ड हार्टशोर्न ने क्रमबद्ध तथा प्रादेशिक भूगोल के मध्य द्वैतवाद को स्पष्ट करते हुऐ भौगोलिक संगठन के तत्वों की तुलना मानव शरीर से की। उन्होंने बताया कि जिस प्रकार मानव शरीर के अंगों का अलग–अलग अध्ययन किया जाता है उसी प्रकार भूगोल में पृथ्वीतल पर पाये जाने वाले विभिन्न समांगी क्षेत्रों के विभिन्न भौगोलिक कारकों का क्रमबद्ध विधि से अध्ययन किया जाता है। भूगोल का मुख्य उद्देश्य भू–तल का क्षेत्रीय अध्ययन करना है। अतः भौगोलिक वर्णन को स्पष्ट करने के लिए क्षेत्रीय विभिन्नताओं तथा अन्तर्सम्बन्धित तथ्यों का गहन अध्ययन तभी सम्भव होता है जब अध्ययन प्रकरणबद्ध हो। अतः स्पष्ट है कि क्रमबद्ध तथा प्रादेशिक विधियां एक–दूसरे की विरोधी नहीं बल्कि एक–दूसरे की पूरक हैं। क्रमबद्ध विधि से भू–आकृति, जलवायु, मिट्टी प्राकृतिक वनस्पति, खनिज आदि का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है जबकि पृथ्वी के विभिन्न प्रदेशों में इन तत्वों का वितरण स्पष्ट किया जाता है इसका तात्पर्य यह है कि क्रमबद्ध विधि का समावेश ताने तथा बाने के समान है जिस तरह से ताने तथा बाने के समावेश से कपड़े का निर्माण होता है उसी प्रकार भूगोल के समग्र अध्ययन के लिए क्रमबद्ध तथा प्रादेशिक विधियों को अपनाया जाता है। पृथ्वी पर क्षेत्रीय विभिन्नताओं का गहन अध्ययन करने लिए क्रमबद्ध विधि तथा प्रादेशिक विधि एक–दूसरे का विरोध नहीं करती बल्कि भू–तल के विश्लेषण में एक–दूसरे का सहयोग करती हैं। संक्षेप में हम कह सकते है कि क्रमबद्ध भूगोल तथा प्रादेशिक भूगोल में कोई द्वैत वास्तविक नही है। क्रमबद्ध भूगोल में जहां भूगोल के विभिन्न प्रकरणों का प्रादेशिक अध्ययन होता है तो

प्रादेशिक भूगोल में प्रदेश विशेष में भूगोल के विभिन्न प्रकरणों का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है। अतः इन दोनों के बीच द्वैधता नहीं है बल्कि दोनो एक दूसरे के पूरक हैं।

REFERENCES:

1.Humboldt, A (1845-1862) Kosmos, 5 vols. Stuttgard Cott.

2.Ritter, C (1822-1859) Die Erdkunde 19 Vols. Berlin G Reimer.

3. Wooldridge and East (1951) Spirit and purpose of Geog, London.

4. Mazid Hussain (2015) Evolution of Geographical thought Rawat Pub. Jaipur

5. James, P.E. All possible worlds, A Histrocal geographical ideas. U.S.A.

6. Bernhard Varenius (1650) Geographic Generalis, Germany.

7. Harvey,D (1969) Explanationin Geography, London Edward Arnold.

8. Mackinder, H.J. (1895) Modern Geograph, German and English, Geographical Jouarnal, vol-6

Dr. Satyabir Yadav

Head, Department of Geography, Govt. college for Women, Pali (Rewari)